Return of Dhamma
Celebrating 50 Golden Years 1969-2019
VIPASSANA MEDITATION
As taught by S.N. Goenka in the tradition of Sayagyi U Ba Khin

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2563, श्रावण पूर्णिमा, 15 अगस्त, 2019, वर्ष 49, अंक 2

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा।
ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कंव वहतो पदं।।

धम्मपद-1, यमकवग्गो

– मन सभी धर्मों (प्रवृत्तियों) का अगुआ है, मन ही प्रधान है, सभी धर्म मनोमय हैं। जब कोई व्यक्ति अपने मन को मैला करके कोई वाणी बोलता है, अथवा शरीर से कोई कर्म करता है, तब दु:ख उसके पीछे ऐसे हो लेता है, जैसे गाड़ी के चक्के बैल के पैरों के पीछे-पीछे हो लेते हैं।

(ऐतिहासिक तथ्य)

बुद्धवाणी का पुनः प्रकाशन

पूज्य गुरुजी ने म्यंमा में 1 से 11 सितंबर, 1955 में पहला शिविर किया। उसमें उनको जो अनुभव हुए उसके आधार पर आत्म-कथन भाग-1 में उन्होंने लिखा —"विपश्यना विद्या को नितांत निर्दोष पाकर मेरे मन में यह तीव्र जिज्ञासा जागी कि जिसके व्यावहारिक पक्ष में कहीं रंचमात्र भी दोष नहीं दीखता, उसके मूल सैद्धांतिक पक्ष को भी देखना चाहिए। मूल बुद्धवाणी का अध्ययन करना चाहिए। उसमें ऐसे दोष अवश्य छिपे होंगे जिनके कारण बुद्ध की शिक्षा हमारे देश में इतनी बदनाम हुई और स्वामी शंकराचार्य तथा उन जैसे प्रकांड विद्वानों द्वारा इसे भारत से निष्कासित किया गया। अन्यथा कोई कारण नहीं कि मेरी भांति सारा देश बुद्ध को तो पूज्य माने, परंतु उनकी शिक्षा को सर्वथा त्याज्य माने। इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझाने के लिए मैंने अपने अति व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर इस परंपरा का साहित्य पढ़ना आरंभ किया।

विपश्यना के पूर्व बुद्ध की शिक्षा को अग्राह्य मानने के कारण मैंने बुद्ध-शिक्षा का कभी कोई ग्रंथ नहीं पढ़ा था। यहां तक कि भदंत आनंदजी द्वारा मुझे दी गयी "धम्मपद" की प्रति भी मेरे टेबल पर तीन वर्ष तक बिना पढ़े पड़ी रही। अत: पहले इसे ही पढ़ कर देखा। एक-एक पद पढ़ता गया। जैसे विपश्यना में धर्म का सर्वथा शुद्ध स्वरूप प्रकट हुआ, वैसे ही धम्मपद के एक-एक पद में सार्वजनीन सत्य धर्म की शुद्धता के ही दर्शन हुए। इतना ही नहीं बल्कि पढ़ते-पढ़ते अनेक बार मेरा तन-मन पुलक-रोमांच से भर उठता था। हृदय हर्षातिरेक से उल्लसित हो उठता था।..."

पूज्य गुरुजी ने 'धम्मपद' पढ़ने के बाद सयाजी के सहयोग से कई अन्य पुस्तकों का अध्ययन किया। तब तक भारत में बुद्धवाणी की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का हिंदी अनुवाद बाजार में उपलब्ध हो चुका था। भदंत आनंद कौसल्यायन उनके घर में मेहमान रह चुके थे। अत: उनके सहयोग से उस समय उपलब्ध संपूर्ण हिंदी अनुवाद को मँगला लिया क्योंकि अब बुद्धवाणी उन्हें एक कीमती खजाने-सी लगने लगी थी। सयाजी से यह भी सुना था कि भारत में मूल बुद्धवाणी, यानि, पालि तिपिटक का सर्वथा अभाव है। अत: उन्होंने इसके पुनर्प्रकाशन का बीड़ा उठाया।

बर्मा (म्यंमा) के प्रधानमंत्री ऊ नू से उनके मित्रवत संबंध थे। उनसे चर्चा की तो उन्होंने देवनागरी में तिपिटक प्रकाशन की बात स्वीकार कर ली। परंतु कठिनाई यह थी कि पालि-देवनागरी के जानकार पंडित भारत से आने चाहिए। उनके बिना काम कैसे होगा? आयें भी तो हम उन्हें डालर में पेमेंट नहीं कर सकते। हां, बर्मी रुपये में वे सारा खर्च देने के लिए तैयार थे। प्रकाशन का बजट भी बना दिया। भारत के विद्वान श्री भरतसिंह उपाध्याय बर्मी रुपये (च्यॉट) लेकर काम करने के लिए तैयार भी हुए, परंतु इतने से काम होने वाला नहीं था। इस बीच जब अक्टूबर 16-17, 1957 के दिन पं. जवाहरलाल नेहरू रंगून गये तब श्री गोयन्काजी

1990 के दशक में पूज्य गुरुजी और पूज्य माताजी भ्रमण करते हुए प्रसन्न मुद्रा में सभी प्राणियों को मंगल मैत्री देते हुए।

उनसे मिले। (यहां यह भी बता दें कि पं. जवाहरलाल नेहरू 1954 में जब बर्मा आये थे तब भी श्री गोयन्काजी उनसे मिले थे और भारतीयों को लेकर अनेक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए उन्होंने श्री गोयन्काजी को 3 घंटे से अधिक का समय दिया था।) इस बार श्री गोयन्काजी ने प्रस्ताव रखा कि भारत सरकार के सहयोग से वे पालि तिपिटक का देवनागरी में प्रकाशन करवाना चाहते हैं। इसके लिए भारत सरकार की ओर से कुछ देवनागरी के जानकार पालि पंडितों की आवश्यकता है, परंतु उनका भुगतान बर्मी सरकार डालर में नहीं कर सकेगी। यह सुन कर नेहरूजी थोड़ा नाराज हुए, उनका स्वाभिमान जागा और कहा कि बुद्धवाणी तो भारत की धरोहर है, इसे भारत प्रकाशित करेगा, तुम यहां कैसे प्रकाशित करोगे? भारत लौट कर उन्होंने देवनागरी प्रकाशन प्रॉजेक्ट को गंभीरता से लिया और बजट में प्रावधान करते हुए यह काम भिक्षु जगदीश काश्यप जी के निर्देशन में "नव नालंदा महाविहार," बिहार को सौंप दिया, जिसकी स्थापना पालि प्रशिक्षण के लिए 1951 में की गयी थी, परंतु, उस समय तिपिटक 'पालि टेक्स्ट सोसायटी' लंदन का ही केवल रोमन लिपि में उपलब्ध था, या फिर अन्य देशों की- बर्मी, थाई, सिंहली, खमेर आदि लिपियों में। वहां पालि पढ़ने वाले विद्यार्थी भी अक्सर विदेशी होते थे। अब देवनागरी को भी महत्त्व दिया जाने लगा। प्रकाशन का काम आरंभ हुआ और संपूर्ण पालि तिपिटक को देवनागरी लिपि में, ४१ जिल्दों में प्रकाशित कर दिया गया। कुछ दिनों तक काम ठीक चला परंतु उसके बाद केवल कुछ अट्ठकथाएं ही वहां से छप सकीं।

आज नालंदा में जो काम चल रहा है, उसमें पालि-हिंदी बृहत् शब्दकोश प्रमुख है, जिसके अब तक 6 भाग निकल चुके हैं।

• रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

पच्चीस शताब्दी पूर्व पालि जिसे उस समय मागधी कहते थे, उत्तर भारत की लोकभाषा थी, वह भाषा जिसमें बुद्ध ने धर्म की शिक्षा दी थी। जिस प्रकार हिंदुओं के धर्म ग्रंथों की भाषा संस्कृत है और कैथोलिकों के धर्मग्रंथों की भाषा लैटिन, वैसे ही पालि वह लोकभाषा है जिसमें बुद्ध की शिक्षाओं को सुरक्षित रखा गया है। तथापि अन्य लोकभाषाओं की तुलना में यह कम प्रसिद्ध है। भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण (शरीर-च्युति) के तीन महीनों के अंदर पांच सौ अरहंतों की विशेष परिषद बुलायी गयी जिसमें बुद्ध के सभी उपदेशों, यानी, उनकी विपुल शिक्षा का संगायन किया गया, जो उन्होंने पिछले पैंतालीस वर्षों में दिया था। अरहंत भिक्षुओं ने इन्हें कंठस्थ किया। इसे ही सामान्य जन तिपिटक के नाम से जानते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है-- ''तीन पिटारियां''। तिपिटक तीन हैं— विनय पिटक (भिक्षुओं के अनुशासन विषयक नियमों का संग्रह), सुत्त पिटक (सामान्य जन के लिए दिये गये प्रवचन) और अभिधम्म पिटक (धर्म संबंधी गंभीर शिक्षाएं)। प्रथम संगायन के समापन के पश्चात कई शताब्दियों तक बुद्ध की शिक्षा को मौखिक परंपरा में विधिवत कंठस्थ कर रखा गया। यह परंपरा बर्मा में आज भी जीवित है। यही तिपिटक श्रीलंका में राजा वट्टगामिनी के संरक्षण में हुई चौथी संगीति के समय ताड़पत्रों पर लिखा गया। पांचवी संगीति बर्मा (म्यंमा) के मांडले शहर में राजा मिन्डोमिन के शासनकाल में हुई, जब पूरा तिपिटक मार्बल की बड़ी-बड़ी 729 पट्टियों पर अंकित हुआ, जिन्हें सुरक्षित रखने के लिए प्रत्येक पट्टी को छोटे-छोटे पगोडा के अंदर रखा गया है, जिन्हें 'पिटक पगोडा' के नाम से विश्व की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में जाना जाता है। यह कुठोडा पिटक पगोडा मांडले पहाड़ियों की तराई में स्थित है। यही साहित्य बाद में इकतालीस खंडों में छपा, जिसमें 82,000 प्रवचन भगवान बुद्ध के और 2,000 प्रवचन उनके प्रमुख शिष्यों के, यानि, कुल 84,000 उपदेश हैं। बाद में इन पर अट्ठकथाएं, टीकाएं तथा अन्य उपटीकाएं जैसे अनुटीका, मधुटीका आदि लिखी गयीं।

प्रथम संगीति के बाद भिक्षुओं और पालि पंडितों की पांच और संगीतियां पालि साहित्य की शुद्धता का पुनरावलोकन करने हेतु हुईं, जिनमें अद्यतन संगीति 1954 से 56 तक म्यंमा में हुयी। इनसे विभिन्न देशों के अलग-अलग उच्चारण और लिपियों के बावजूद 2500 वर्षों तक भगवान बुद्ध की वाणी को यथासंभव उसके मूल रूप में सुरक्षित रखने के संयुक्त प्रयासों का प्रमाण मिलता है।

विपश्यना विशोधन विन्यास की स्थापना

अंततः इस अधूरे पड़े काम को पूरा करने के लिए पूज्य गुरुजी ने धम्मगिरि के परिसर में वर्ष 1985 में 'विपश्यना विशोधन विन्यास' की स्थापना की। जब श्री गोयन्काजी यहां सतिपट्ठान सुत्त का शिविर ले रहे थे तब उन्होंने एक 'विशोधन' संस्थान की स्थापना के महत्त्व को अनुभव किया। यह वह प्रमुख सूत्र (प्रवचन) है जिसमें भगवान बुद्ध ने विपश्यना विधि को क्रमबद्ध तरीके से समझाया है। श्री गोयन्काजी ने देखा कि सतिपट्ठान शिविरों में भाग लेने वाले साधक बुद्ध वाणी के अध्ययन के साथ-साथ इसे साधना के अभ्यास में भी प्रयोग करते हैं और कृतज्ञता से ओतप्रोत होकर खूब प्रेरणा ग्रहण करते हैं। जब वे बुद्ध वाणी से अपने अनुभवों की तुलना करते हैं तब उनमें सकारात्मक आत्म विश्वास की अनुभूति होती है। स्वभावतः उनमें से कुछ और अधिक अध्ययन के लिए प्रेरित होते हैं। अतः उन्हें समुचित अवसर तथा सुविधाएं प्रदान करने के लिए 'विपश्यना विशोधन विन्यास' की स्थापना की गयी।

विन्यास का कार्य दो प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित हुआः—

1. संपूर्ण पालि साहित्य का प्रकाशन एवं पालि का प्रशिक्षण
2. दैनिक जीवन में विपश्यना की उपयोगिता पर शोध।

तिपिटक, अट्ठकथा और टीकाओं का पूरा साहित्य विभिन्न बुद्धानुयायी देशों की लिपियों में उपलब्ध है। बर्मा (म्यंमा) में कई टीकाओं और दीपनियों का बर्मी भाषा में अनुवाद भी उपलब्ध है। परंतु दुर्भाग्य से देवनागरी लिपि में यह सब अप्राप्य था। अर्थात अपने उद्गम क्षेत्र भारत में, जहां बुद्ध की शिक्षा का उद्भव हुआ, वहां बुद्धवाणी अप्राप्य थी।

जब यह ज्ञात हुआ कि थाईलैंड में 'थाई विश्वविद्यालय' ने पालि में शोध करने हेतु रोमन-लिपि में तिपिटक मूल का निवेशन किया है और उस पर शोधकार्य चल रहा है, तब पूज्य गुरुजी ने उनसे संपर्क करने का निर्देश दिया। गहन विचार-विमर्श के बाद वे मूल पालि की हार्ड डिस्क देने के लिए तैयार हुए। वहां से कीमत देकर 80 एमबी की Budsir प्रोग्राम की हार्डडिस्क भारत आयी। मुंबई के कंप्युटर बेचने वालों ने उनके निर्देशों को पढ़ कर उसे चलाया। तब वह कंप्युटर खरीद कर इगतपुरी लाया गया। यहां पर कुछ शब्दों की खोज की गयी—जैसे कि पूज्य गुरुजी जानना चाहते थे कि 'धम्म' एवं 'विपस्सना' शब्द पूरे तिपिटक में कितनी बार आये हैं और किस-किस संदर्भ में आये हैं आदि। परंतु यह खोज करने वाला कार्यक्रम सफल नहीं हुआ।

भारत में पहला अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना सम्मेलन दिसंबर 1986 में एक दस-दिवसीय शिविर के अंत में इगतपुरी में हुआ, जिसमें डॉक्टरों और शोध-कर्त्ताओं को विशेषरूप से आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन में यह डिस्क कुछ काम नहीं आयी। परंतु विन्यास के निदेशक डॉ. रवींद्र पंतजी ने तिपिटक के ग्रंथों में से पूज्य गुरुजी के कहे अनुसार उन पाली शब्दों के विवरण को न केवल खोज निकाला, बल्कि उन पर शोध निबंध भी लिखे, जिसे विपश्यना विशोधन विन्यास की ओर से प्रस्तुत किया गया। विपश्यना सम्बंधित इन विशेष महत्त्वपूर्ण पालि शब्दों का पूज्य गुरुजी ने अपने उद्घाटन प्रवचन में उल्लेख भी किया। बाद में हुए मई 1987 एवं दिसंबर 1987 के सम्मेलनों में भी ऐसा ही किया गया। इन तीनों सम्मेलनों में भाग लेने वाले सभी सहभागियों ने पहले शिविर किया, फिर बाद में अपने लेखों में अनुभवों का समन्वय स्थापित किया। इसके बाद दिल्ली तथा इगतपुरी में और भी कई सेमिनार हुए। तब तक हमारी खोज का दायरा बढ़ चुका था। अतः अपनी ओर से शीघ्रातिशीघ्र तिपिटक के निवेशन का काम जोर पकड़ने लगा।

देवनागरी में टाइप करने के प्रोग्राम पहले ही खरीदे गये थे। अब काम को गति देने के लिए और भी कंप्युटर खरीदे गये। अनेक लोग इस कार्य में जुड़ते चले गये। पूज्य गुरुजी ने पालि पंडितों को आमंत्रित किया, जिनमें प्रमुख थे डॉ. सी.एस. उपासक, डॉ. एन.एच. साम्तानी, डॉ. महेश तिवारी, प्रो. अंगराज चौधरी, डॉ. ओमप्रकाश पाठक, श्री सुभाशीष बरुआ, श्री के. मंजप्पा, बर्मी पं. U Thin Aung, U Tint Hsan, U Myat Khaing, जिनके अहर्निश प्रयास से सारा तिपिटक, अट्ठकथा, टीका तथा अनुटीका के साथ देवनागरी लिपि में भारत में प्रथम बार उपलब्ध हुआ। श्री रामअवध वर्मा, ने पू. गुरुजी के निर्देशन में अनेक बर्मी पुस्तकों, दीपनियों आदि का हिंदी अनुवाद किया। यों धर्म का कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ता चला गया।

आधुनिक युग में परियत्ति प्रकाशन

'विपश्यना विशोधन विन्यास' ने देखा कि जो तिपिटक नालंदा में देवनागरी में छपा है वह बर्मा में हुए छठे संगायन के अनुरूप नहीं है। अतः बर्मी लिपि में प्रकाशित छट्ठ संगायन का सारा साहित्य मँगाया गया, यहां अनेक लोगों और टाइपिस्टों को बर्मी लिपि सिखायी गयी, ताकि वे बर्मी पढ़ते हुए देवनागरी में टाइप करें और चेक करने वाले तदनुसार पुस्तकें देख कर चेक करें। इस प्रकार सारे मैटर को क्रमशः दो अलग-अलग टाइपिस्टों द्वारा टाइप करवाया गया, यह समझते हुए कि दोनों एक-सी गलती नहीं कर सकते। इसे जांचने के लिए कंप्युटर का एक तुलनात्मक (कम्पेरिजन) प्रोग्राम तैयार किया गया जो दोनों समान फाइलों की तुलना करते हुए स्वयं जांच ले और जहां-जहां भूल हो या असमानता हो, वहां-वहां निशान लगा दे। सुश्री प्रीति डेढिया और उनकी देख-रेख में जांच करने वाले एक ही स्क्रीन पर दोनों को देखते हुए बर्मी पुस्तक के अनुसार जो सही होता उसे ओके करते, जो गलत होता उसे सुधार देते। इसके बाद उस प्रोग्राम को पुनः चलाया जाता ताकि कोई भूल रह गयी हो तो उसे पुनः सुधारा जा सके। इतना होने के बावजूद पेपर पर प्रिंट होने के बाद पालि पंडितों को सब को मिला कर पुनः देखना पड़ता ताकि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि न रह जाय। यह सारा काम ग्यारह वर्षों तक लगातार चलता रहा।

कंप्युटर के प्रमुख सूत्रधार बने इंजीनियर श्री राधेश्याम गोयन्का, पू. गुरुजी के सबसे छोटे भाई। इन्होंने अन्य कई लोगों के सहयोग से कई प्रोग्राम बनाये जो अत्यंत सहायक सिद्ध हुए।

पाद टिप्पणी:--

1. *[[१९९० में "दीघनिकाय", इसकी अट्ठकथा, टीका आदि बारह पुस्तकों का बर्मी लिपि से "देवनागरीलिपि" में लिखने-जांचने का काम गुरुजीने उन नेपाली भिक्षुओं, अनागारिकाओं और गृहस्थों को दिया था जो बर्मी लिखना–पढ़ना जानते थे। यह कार्य सम्पादित करने के लिए श्रद्धेय ज्ञानपूर्णिक भंतेजी से अनुरोध किया गया था। उन लोगों से जल्दी से जल्दी लिखाने के लिए टेलिफोन करना, जिस–जिस ने लिख लिया उसकी सभी पाण्डुलिपियों को कम्प्युटराइज कराना आदि का काम मुझे दिया गया था।-- (NanimaiyonManandhar, Nepal)*

2. म्यंमा में भी अट्ठकथाओं, टीकाओं और अनुटीकाओं (निस्सय) आदि का म्यंमा लिपि में टंकन हुआ जिसमें म्यंमा के 8 व्यक्ति लगभग तीन वर्ष तक निरंतर काम करते रहे। वह सब कुछ श्री राधेश्याम गोयन्का को सीधे भेजा गया।-- (बनवारीलाल गोयन्का, म्यंमा)

3. ऐसे ही काम कुछ अन्य लोगों को भी वितरित किया गया था, परंतु वह सब काम नहीं आ सका। क्योंकि वह लिप्यंतरण के अनुकूल नहीं हुआ था।]]

हमारे यहां छपाई में विलंब हो रहा था, फिर भी 140 जिल्दों में से 55 छप चुकी थीं। तब ताईवान की एक सेवाभावी संस्था—"दि कॉरपोरेट बॉडी ऑफ दि बुद्ध एजूकेशनल फाउंडेशन" को इसका पता चला तो उसने कहा कि सेट किया हुआ सारा टेक्स्ट मैटर यदि उन्हें दे दिया जाय तो वे सभी पुस्तकें बहुत कम समय में मुफ्त में छाप कर वापस भिजवा देंगे, क्योंकि उनके पास छपाई का बहुत बड़ा सेटअप तैयार है। यह धर्म का बहुत बड़ा चमत्कार था! उस संस्था की बारीकी से जांच की गयी और पाया गया कि सचमुच वह एक बहुत बड़ी सेवाभावी संस्था है और ऐसे अनेक कार्य पहले भी कर चुकी है। विश्वास दृढ़ होने पर जैसे-जैसे पुस्तकें तैयार होती गयीं, उन्हें भेजी जाती रहीं और उन्होंने 140 जिल्दों का पूरा तिपिटक-सेट बड़ा ही सुंदर, सजिल्द छाप कर हमें वापस लौटाना आरंभ कर दिया। प्रत्येक की 1100-1100 प्रतियां छपीं। विश्व के पालि पंडितों को जहां कहा गया, वहां उन लोगों ने सीधे ही भेज दिया। पुस्तकें भारत आने पर यहां के पालि विद्वानों, अनेक विहारों तथा बड़े-बड़े पुस्तकालयों को पूरा तिपिटक यहां से भी मुफ्त भेजा गया।

प्रत्येक ग्रंथ में विभिन्न सुत्तों (प्रवचनों) की विपश्यना साधना से प्रासंगिकता दरसाते हुए समालोचनात्मक प्रस्तावना की व्यवस्था है। CSCD के माध्यम से किसी भी शब्द की खोज की जा सकती है। कोई विशेष शब्द तिपिटक में कहां और कितनी बार आया है, यह तुरंत मालूम पड़ जाता है। इसे सूचीवद्ध करके देख या प्रिंट कर सकते हैं। यों लिप्यंतरण हो जाने के बाद यह सारा साहित्य पहले 7 लिपियों में उपलब्ध कराया गया— यथा- देवनागरी, रोमन, बर्मी, थाई, सिंहली, खमेर (कंबोडियन) आदि। इस प्रकार इसकी छट्ठ संगायन सीडी बन कर तैयार हुई जो सभी जिज्ञासुओं को मुफ्त वितरित की गयी। सीडी-रोम version-3 में कुल 217 Pali texts यानी, सभी पालि पुस्तकों का समावेश है। इसमें तिपिटक का संपूर्ण सेट (मूल, अट्ठकथा, टीका, अनुटीका सहित) कुल 140 जिल्दों का सेट है। अन्य में विसुद्धिमग्ग, व्याकरण, नीतियां, दीपनियां आदि 68 ग्रंथ हैं। इसी में पूज्य गुरुजी की लिखी हुई पुस्तक 'बुद्धगुणगाथावली' भी जोड़ दी गयी है। यानी, कुल 217 ग्रंथ पाठकों के अध्ययन और विशोधन के लिए नेट पर उपलब्ध हैं। जैसे-जैसे लिप्यंतरण होता गया, ये सभी पुस्तकें विश्व की अनेक लिपियों में उपलब्ध होती गयीं। ये सभी ग्रंथ— www.tipitaka.org लिंक पर नेट पर हैं, जिन्हें कोई भी पढ़ सकता है, छाप सकता है और सेमीनारों में दावे के साथ प्रस्तुत कर सकता है।

पालि-प्रशिक्षण को गति मिली

एक ओर पालि प्रकाशन को गति मिली तो दूसरी ओर 'विपश्यना विशोधन विन्यास' ने साधकों के लिए पालि-प्रशिक्षण का द्वार खोल दिया। पूज्य गुरुजी का विचार था कि साधक विपश्यना साधना करते हुए अधिक अच्छी तरह से पालि सीख सकेंगे। अतः उन्हें धम्मगिरि पर रह कर पढ़ना चाहिए। प्रारंभ में पालि डिप्लोमा का विधिवत प्रशिक्षण देने के लिए पुणे विश्वविद्यालय से संपर्क किया गया। उसकी निगरानी और निर्देशानुसार पालि डिप्लोमा की कक्षाएं चलाने का काम धम्मगिरि के परिसर में हमारे यहां नियुक्त पालि पंडितों ने किया। फाइनल परीक्षा में विद्यार्थियों को अच्छे अंक प्राप्त हुए और उन्हें डिप्लोमा का प्रमाण-पत्र दिया गया। परंतु इसके बाद कुछ साधकों के सहयोग से मुंबई विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में परीक्षाएं होने लगीं। कई वर्षों तक पालि पढ़ाई का कार्यक्रम यहां इगतपुरी में चलता रहा। परंतु देखा गया कि अनेक लोग इनका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। अतः उनके लिए अनिवासीय पाठ्यक्रम भी बनाये गये। इनका लाभ उठाते हुए कुछ विद्यार्थी आगे बढ़ते हुए इस योग्य हो गये कि वे पालि पढ़ाने का भी काम करने लगे हैं।

देखा गया कि मुंबई के लोगों को इगतपुरी आकर कक्षा में शामिल होना कठिन है तो पू. गुरुजी ने 'पगोडा परिसर' में पालि-प्रशिक्षण का काम करने की अनुमति दे दी। अर्थात विन्यास का कुछ काम मुंबई में होने लगा। अब 'विपश्यना विशोधन विन्यास' और 'मुंबई विश्व विद्यालय' के संयुक्त तत्त्वावधान में पालि डिप्लोमा की पढ़ाई पगोडा परिसर में होती है, परीक्षाएं विश्वविद्यालय के प्रांगण में होती हैं। इसी क्रम में अब मास्टर डिग्री (शोध द्वारा, एम.फिल और पी.एच.डी. करने) का कार्य भी आरंभ हो चुका है। यानी, लोग विधिवत डिग्री प्राप्त करने में सक्षम हो रहे हैं।

परियत्ति के साथ-साथ पटिपत्ति के भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम निर्धारित होते रहते हैं। वहां निवासीय और अनिवासीय दोनों प्रकार के कार्यक्रम होते हैं। किसी भी विद्यार्थी को कम से कम एक शिविर में बैठना अनिवार्य होता है। इस प्रकार परियत्ति के साथ-साथ पटिपत्ति का काम भी होता है।

पालि प्रकाशन के पश्चात अंगुत्तरनिकाय भाग-1 का हिंदी में अनुवाद, पूज्य गुरुजी की अनेक हिंदी पुस्तकें, उनके अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद सहित सैकड़ों पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। पांचवीं शताब्दी में बुद्धघोष द्वारा लिखित सुत्तनिपात अट्ठकथा का हिन्दी अनुवाद प्रो. अंगराज चौधरी ने पूरा किया जो यहीं से प्रकाशित हुयी है।

पूज्य गुरुजी की बहुत बड़ी इच्छा थी कि घर-घर में पालि पढ़ी जाय। श्री टंडनजी ने पू. गुरुजी की इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए अथक प्रयास किया। अनेक शिविर लगा कर लोगों को पालि पढ़ाया, सिखाया और अब शीघ्र ही उनकी एक पुस्तक—"घर घर में पालि" छप कर आ रही है। विश्वास है लोग इसे पसंद करेंगे। पटिपत्ति (साधनाभ्यास) के साथ-साथ परियत्ति (साहित्यिक समझ) में भी आगे बढ़ेंगे। सब का मंगल हो!

[[विपश्यना पर शोध की बात हम अगले अंक में करेंगे। (सं.)]]

पगोडा पर संघदान का आयोजन

रविवार 29 सितंबर, 2019 को पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि व शरद पूर्णिमा; **रविवार, 15 दिसंबर,** 2019 को 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, तथा **रविवार, 12 जनवरी,** 2020 को पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथियों के उपलक्ष्य में संघदानों का आयोजन प्रातः 9 बजे से निश्चित है। जो भी साधक-साधिकाएं इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, or फोनः 022- 62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

"मित्र उपक्रम" महाराष्ट्र का एक अनोखा उपक्रम

मित्र उपक्रम महाराष्ट्र सरकार और विपश्यना विशोधन विन्यास का एक संयुक्त उपक्रम है जो 2012 में पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से प्रारंभ हुआ। इसके अंतर्गत अध्यापकों को 10-दिन के शिविर एवं विद्यार्थियों को आनापान की शिक्षा दी जाती है, जिसका अभ्यास विद्यार्थी दिन में दो बार, 10-10 मिनट नियमित रूप से करते हैं। इससे उनके स्वभाव में भारी परिवर्तन देखा गया है।

इस उपक्रम के लिए महाराष्ट्र के एक लाख (100,000) से अधिक स्कूलों तक पहुँचना है। इतनी बड़ी मांग को पूरा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन नहीं हैं। इसे आगे बढ़ाने के लिए आवश्यकता हैः– 1. ऐसे सेवाभावी धर्मसेवक/सेविकाओं की जो अपना पूरा समय देकर कार्य को आगे बढ़ाएं। उन्हें आवश्यकतानुसार मानधन भी दिया जायगा। तदर्थ 'विपश्यना विशोधन विन्यास' के निम्न पते पर शीघ्र आवेदन करें।

2. इन सब लोगों को मानधन देने तथा अध्यापकों के दस-दिवसीय शिविर लगवाने के लिए पर्याप्त धनराशि की आवश्यकता है। तदर्थ जो भी साधक-साधिकाएं **बच्चों को धर्म-दान देने के महान पुण्यकार्य में** भाग लेना चाहें, वे कृपया 'विपश्यना विशोधन विन्यास' के निम्न पते पर शीघ्र संपर्क करें, जिसे सरकार की ओर से 100% आयकर की छूट प्राप्त है।

पूरा पताः Vipassana Research Institute, Dhamma Giri, Igatpuri-422403, Dist. Nashik, (Maharashtra). बैंक विवरण इस प्रकार हैः--

Payee's Name: Vipassana Research Institute,
Bank A/c No.: 11542165646, **Bank Name:** State Bank of India,
Branch Code: Igatpuri – 0386, **IFSC Code:** ABIN0000386,
MICR CODE: 422002702, **CIF No.:** 81262896311.

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1-2. श्री अनिल एवं श्रीमती सुनीता धर्मदर्शी, क्षेत्रीय समन्वयक आचार्य, अहमदाबाद एवं शेष उत्तर गुजरात

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. सौ. वंदनाताई महेश वाळवेकर, सांगली
2. Mr. Chang-An Wang, Taiwan
3-4. Mr. Hwai Derg CHIANG & Mrs. Hsiang Chi, Shanti, CHU, Taiwan
5. Mrs. Gui-Rong Wang, China
6. Mr. Hui Min Wang, China

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री जितेंद्र राजपूत, दिल्ली
2. श्रीमती स्वाती तानाजी काटे, पुणे
3. श्रीमती दक्षा उदेशी, सोलापुर
4. कु. पायल उदेशी, सोलापुर
5. श्री जितेंद्र पटेल, सोलापुर
6. श्री.भालचंद्र नामदेव उकरण्डे, सोलापुर
7. श्रीमती प्रभावती भालचंद्र उकरण्डे, सोलापुर
8. Daw Thin wat Htwe, Myanmar
9. Daw Nang khin Si, Myanmar
10. Daw Nang Khin Khin, Myanmar
11. Daw Myat Moe Aye, Myanmar
12. Daw Nang Khin Aye, Myanmar
13. Daw Khin Than Myint, Myanmar
14. Daw khin Mar Aye, Myanmar
15. Daw Win Win Htay, Myanmar
16. Daw Win Mar, Myanmar
17. Zaw Win Myat, Myanmar
18. U Aung Kyaw OO, Myanmar
19. Daw Khin Khin Cho, Myanmar

"धम्म के 50 साल" पर्व पर 15-16 दिसंबर, 2019 को ग्लोबल विपश्यना पगोडा पर समापन कार्यक्रम

जैसा कि आप सभी जानते हैं भारत में विपश्यना के 50वें (स्वर्णिम) वर्ष में अनेक कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। इसी क्रम में इस वर्ष की समाप्ति पर आगामी **15-16 दिसम्बर, 2019** को 'विश्व विपश्यना पगोडा' परिसर में एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का लक्ष्य जहां एक ओर सारे विश्व के विपश्यी साधकों को एक स्थान पर, एक साथ ला कर सामूहिक साधना व मैत्री के साथ धर्म में अधिक पुष्ट होने के लिए है, वहीं दूसरी ओर साथ मिलकर गत पचास वर्षों के हमारे अनुभव और आने वाले पचास वर्षों के लिए हमारी दूरदृष्टि की रूपरेखा तैयार करना भी है। इस दो-दिवसीय कार्यक्रम में भगवान बुद्ध की देन विपश्यना, और उनके उपदेशों पर धर्म चर्चा की जायगी, साथ ही कुछ पुराने साधकों द्वारा गुरुजी के सान्निध्य में धर्म-कार्य करते समय की कुछ स्मृतियां दिखायी जायँगी।... आप सभी से निवेदन है कि इस कार्यक्रम में अवश्य पधारें। आने के पूर्व पंजीकरण कराने की व्यवस्था निम्न प्रकार से होगी:--

WhatsApp- 82918 94644; SMS- 82918 94645 या Website: ...

अंशकालिक गैर आवासीय लघु पाठ्यक्रम विपश्यना ध्यान-परिचय (सैद्धांतिक रूप से) २०१९

विपश्यना विशोधन विन्यास और मुंबई यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में नया लघु पाठ्यक्रम 'विपश्यना ध्यान का परिचय' की दूसरी बैच शुरू होने जा रही है, जो विपश्यना ध्यान के सैद्धांतिक पक्ष एवं विभिन्न क्षेत्रों में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता को उजागर करेगी।

पाठ्यक्रम की अवधि : ११ सितंबर २०१९ से ४ दिसंबर २०१९ तक (३ महीने)

स्थान : सभागृह नंबर २, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई, बोरीवली (प), मुंबई. ९१

अधिक जानकारी एवं आवेदन-पत्र इस वेब लिंक पर प्राप्त करें:- https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs; फोन संपर्क – ०२२-५०४२७५६० (सुबह १०:३० से शाम ०५:३०) ई-मेल: mumbai@vridhamma.org

अभिधम्म दैनिक जीवन में - २०१९-२०

"अभिधम्म दैनिक जीवन में" लघु कोर्स वी.आर.आई. द्वारा मुंबई विश्वविद्यालय की संबद्धता के तहत संचालित किया जायेगा। अनुसूची: सप्ताह में एक दिन **हर शनिवार** ३ घंटे के लम्बे सत्र, दोपहर १:०० से ४:०० बजे तक. **तारीख:** १६ नोव्हेंबर २०१९ से १ फरवरी २०२० (३ महीने). **शैक्षणिक योग्यता:** HSC/Old SSC प्रमाणपत्र और एक फोटो.

व्याख्यान ग्लोबल पगोडा कैम्पस, सभागार नंबर २ में होगा।

फॉर्म जमा करने की अंतिम तारीख ८ नोव्हेंबर २०१९ है। फॉर्म ऑनलाइन उपलब्ध है.: http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses

फॉर्म- ई-मेल या पोस्ट द्वारा भेज सकते है। पूरा पता एवं जानकारी- जैसे अंशकालिक में दी गयी है।

वी.आर.आई. - पालि आवासीय पाठ्यक्रम – २०२०

पालि-हिन्दी (45 दिन का आवासीय पाठ्यक्रम) (९ फ़रवरी से २६ मार्च २०२० तक) इस कार्यक्रम की योग्यता जानने के लिए इस शृंखला का अनुसरण करें--

https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs

(अंशकालिक में दी गयी जानकारी देखें।), **मोबा. संपर्क:** ९६१९२३४१२६, श्रीमती बलजीत लांबा: ९८३२५१८९७०, मिस. हर्षिता ब्रम्हणकर: ८८३०१६६२४६.

मंगल मृत्यु

मुंबई के वरिष्ठ स. आचार्य श्री सुरेश संपत अमेरिका में अपने परिवार के साथ थे। 1 जुलाई, 2019 को वहीं पर शांतिपूर्वक उनका शरीर शांत हो गया। उन्होंने धर्म की बड़ी सेवा की थी और सामूहिक साधनाओं के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई। वे नये पुराने सभी साधकों को नियमित साधना के लिए उत्साहित करते रहते थे। धम्म परिवार की मंगल मैत्री।

ग्लोबल पगोडा में 2019/20 के एक-दिवसीय महाशिविर

29 सितंबर- पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि एवं **शरद पूर्णिमा** के उपलक्ष्य में, **रविवार, 12 जनवरी, 2020** को पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथियों के उपलक्ष्य में; पगोडा में उक्त महाशिविरों का आयोजन होगा जिनमें शामिल होने के लिए कृपया अपनी बुकिंग अवश्य करायें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **समयः** प्रातः11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग हेतु कृपया निम्न फोन नंबरों पर फोन करें अथवा निम्न लिंक पर सीधे बुक करें। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)

Online Regn: http://oneday.globalpagoda.org/register

दोहे धर्म के

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की जोत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

आओ प्राणी विश्व के, चलें धरम के पंथ।
धरम पंथ ही शांति पंथ, धरम पंथ सुख पंथ॥

यह तो वाणी बुद्ध की, सत्य धर्म की ज्योत।
भरी भलाई जगत की, मंगल ओत-परोत॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

आ तो बाणी बुद्ध री, सांच धरम री जोत।
आखर आखर मँह भर्यो, मंगळ ओत-परोत॥

सबद सबद इमरत झरै, बुद्ध बचन अणमोल।
आधि ब्याधि आरत जगत, दी संजीवन घोळ॥

संबुध थारी बोधि रो, किसो' क मंगळ घोस।
सूत्यां नै जाग्रति मिलै, मदहोसां नै होस॥

बोधि महा महिमामयी, माटी सुवरण होय।
कांकर तो हीरा हुवै, पत्थर पारस होय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.

मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2563, श्रावण पूर्णिमा, 15 अगस्त, 2019

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 31 July, 2019, DATE OF PUBLICATION: 15 AUGUST, 2019

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org